रात्रि क्लास 16/11/68 ओमशांति शिवबाबा और वर्सा याद है?
रिमार्क्स भल लिखते हैं यह भी अच्छा है; परंतु समझते नहीं हैं। कुछ अभी देरी देखने में आते हैं वा बच्चे बड़ा आदमी देखे फां हो जाते हैं। पूरा समझाते नहीं हैं। कहना चाहिए ह... राजधानी स्थापन कर रहे हैं, जहाँ जज आदि होते ही नहीं; क्योंकि पाप ही नहीं होते। अपन को भी तैयारी करनी चाहिए उस राज्य में चलने के लिए। बाप तो कहते हैं जो पास्ट हुआ सो ड्रामा। बच्चे भी सर्विस करते रहते हैं। हरेक अपना पुरु॰ करते हैं ऊँच पद पाने; क्योंकि लॉटरी ही बहुत भारी है। इसमें ज़रूर सम्भाल से कदम उठाते होंगे। यह बात ऐसी नहीं है जो समझ नहीं सकें, क्या पद पावेंगे। यह है बेहद का स्कूल। स्कूल में 50/100 स्टूडेंट होंगे, समझते होंगे 5/7 नम्बर, नहीं तो 15/20 नम्बर आवेंगे। छोकड़े और छोकड़ियाँ होती हैं ना। यह अक्षर राइट है अर्थात् गिरे क्यों? यह भी समझते नहीं। बच्चों को मालूम नहीं पड़ता। यह तो तुम जानते हो कितना ऊपर से नीचे गिरे हैं। चो(टी) से गिरे हैं। फिर चो(टी) पर चढ़ना है। बहुत ऊँच पद से गिरते हैं। यहाँ कुछ भी छिपाने करने की बात नहीं। प्रैक्टिकल बात है; परंतु भारतवासी अंत में समझेंगे। जब सुनेंगे इनका राज्य स्थापन हो रहा है। सीढ़ी में भी दिखाया है ऊँच ते ऊँच, फिर सीढ़ी उतरते-2 नीचे आते हैं। बच्चे जानते हैं हम एकदम वन नम्बर ढाके से 84 डाके पर आ गये हैं। फिर चढ़ने का उपाय भी बाप अति सहज बतलाते हैं। सन्यासी तो कहते हैं भक्ति करेंगे, यज्ञ-तप आदि करने से चढ़ेंगे; परंतु चढ़ न सकते; क्योंकि ज्ञान और योग के पर टूटे हुये हैं। अभी तुम्हारे को पर मिल रहा है उड़ने की। माया ऐसी भुला देती है जो हम घर जा नहीं सकते। बाकी मनुष्य जो कहते हैं 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं। अच्छा फिर क्या होगा? ज़रूर पुरानी दुनिया खत्म हो जावेगी। फिर हम घर जावेंगे। 40 हज़ार वर्ष की बात तो याद पर(पड़) न सके। तो बच्चों को सर्विस पर ध्यान देना चाहिए। सर्विस बिग... डिस-सर्विस है। जो सर्विस नहीं करते हैं वह ज़रूर डिस सर्विस ही करते हैं। इसका नतीजा क्या होगा? पाई पैसे का पद, जितना पुरुषार्थ करेंगे। कोई महारथी, कोई प्यादे हैं। पुरुषार्थ पूरा करना है। इस हालत में हम मर जावें तो क्या पद पावेंगे, बाप अटकल पर बता सकते हैं। बाकी यह समझते हो अभी घर जाना है। सारा मदार तो पढ़ाई पर ही है। घर ज़रूर जाना है हिसाब-किताब चुक्तू कर। सभी का जमा होता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो जमा था वह आधा कल्प खाया। खाता शुरू हुआ। अभी पुरुषार्थ कर याद की यात्रा से अपने पाप भस्म करने हैं। फिर ऐसा ही पद पावेंगे। बाकी जाना है भरतू होकर। जैसे नार की क्रिगनी होती है ना। यह चक्र है ही ऐसे। खाली होती है, फिर भरतू होती है, फिर खाली होगा। जैसे नार की क्रिगनी होती है। भरतू होने लिए बाप ज्ञान सागर से योग लगाना होता है। जैसे बाप कहते हैं आई एम मोस्ट ओबिडियंट सर्वेंट। बच्चों का भी ऐसे आवाज़ निकलना चाहिए। हम भी ओबीडियंट सर्वेंट बनकर हरेक के कल्याण लिए युक्तियाँ रचनी है। अच्छा, मीठे-2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।